कक्षा-I

पाठ 1 गौशाला पद

पाठ 2 मनुष्य के मित्र

पाठ 3 पौधों की सिंचाई

1
गौशाला पद

भारत विश्व का अग्रणी दूध उत्पादक देश है। भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं में पशुओं विशेष रूप से गाय का बहुत ही महत्तवपूर्ण स्थान है। ये हमारे जीविकोपार्जन के साथ ही हमारे सामाजिक रीति-रिवाजों और हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुकी हैं। हम अपने घरों में गायों की स्वयं देखभाल करते हैं। यह हमें दूध देती हैं जो कि हमें स्वस्थ रखता है। गाय से मिलने वाले अन्य उत्पाद जैसे कि गोबर, गोमूत्र आदि का भी खेती में उपयोग किया जाता है। इस पाठ में हम भारतीय गायों के महत्व तथा उनकी प्रमुख विशेषताओं के बारे में जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- हमारे जीवन में गाय की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारतीय गायों की शारीरिक संरचना की पहचान कर सकेंगे;
- शुद्ध भारतीय प्रजाति की गायों तथा संकर प्रजाति के मध्य अन्तर कर सकेंगे; और
- मनुष्य के लिए गाय के लाभों की सूची बना सकेंगे।

1.1 हमारे जीवन में गाय

गाय भारतीय कृषि तथा सामाजिक रीति-रिवाजों का एक अभिन्न हिस्सा बन गयी है। वैदिक युग से ही भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम उनका महत्व अपने दैनिक जीवन में देख सकते है। वैदिक काल और उसके बार के कालखंड में भी गायें ग्रामीण अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिंदु रही हैं। खेतों की जुताई, बुवाई, गहाई और एक स्थान से दूसरे स्थान तक कृषि उत्पादों के परिवहन में बैलों का प्रयोग होता था। गायों से दूध मिलता था और उससे अन्य उत्पाद बनते थे। गाय से मिलने वाले अन्य उत्पाद, जैसे-गोबर इत्यादि का खाद के रूप में तथा भोजन बनाने के लिए ईंधन के रूप में भी प्रयोग होता था। प्राचीन भारतीय समाज में गाय के महत्व के कारण ही वैदिक ग्रंथों में इसे 'कामधेनु' कहा गया है। कामधेनु अर्थात् सारी इच्छाओं को पूरा करने वाली गाय।

चित्र 1.1 भारतीय गाय

1.2 भारतीय गाय की शारीरिक विशेषताएं

भारत एक विविधतापूर्ण देश है। यहां अलग-अलग भौतिक और जलवायविक दशाओं के साथ-साथ विभिन्न संस्कृतियां भी हैं। यही भिन्नता भारतीय गायों में भी हैं। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में गायों की विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं।

इन सभी प्रजातियों में रंग, आकार, सींग, दूध उत्पादन आदि की भिन्नताएं पाई जाती हैं। इन भिन्नताओं के बावजूद इनमें कुछ आसानी से दिखने वाली समानताएं भी हैं। भारतीय गायों की विशेषताओं को हम इस रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं-

1. **कूबड़** – गाय की लगभग सभी भारतीय प्रजातियों के पीठ पर कूबड़ होता है। गाय की तुलना में बैलों का कूबड़ बड़ा होता है। अलग-अलग प्रजातियों में भी कूबड़ के आकार में भिन्नता पाई जाती है।

2. **गल कंबल** – गाय की भारतीय प्रजातियों की अन्य प्रमुख विशेषता-गलकंबल है। आप अपने घर या आस-पड़ोस की गायों को ध्यान से देखें। आप पाएंगे कि उनके गले के नीचे मुड़ी हुई त्वचा लटक रही है, यही गलकंबल है। यह उन्हें गर्मी सहने की ताकत के साथ-साथ भारत की सभी पर्यावरणीय दशाओं में जीवित रहने की ताकत देती हैं।

3. **सींग** – अधिकांशत: सभी भारतीय प्रजातियों के सींग बड़े होते हैं। हालांकि उनकी लंबाई और चौड़ाई अलग-अलग प्रजातियों में अलग-अलग हो सकती है।

4. **रंग** – भारतीय गायों की अधिकांश प्रजातियां एक रंग में पाई जाती हैं। भिन्न-भिन्न प्रजातियों में रंग का अंतर पाया जा सकता है। ये रंग सफेद, काला, भूरा, लाल या कुछ अन्य रंग हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 1.1

रिक्त स्थान भरिए-

1. वैदिक ग्रंथों में इसे ..... कहा गया है।
2. उन प्रजातियों में रंग, ..., सींग, दूध उत्पादन आदि की भिन्नताएं पाई जाती है।
3. गाय की तुलना में बैलों का ..... बड़ा होता है।
4. अधिकांशत: सभी भारतीय प्रजातियों के ..... बड़े होते हैं।
5. गलकंबल उन्हें ..... देते हैं।

1.3 शुद्ध भारतीय और संकर प्रजातियां

भारत एक विविधतापूर्ण देश है और यह विविधता गाय की प्रजातियों में भी पाई जाती है। समय के साथ-साथ कुछ विदेशी प्रजातियां भी अधिक दूध उत्पादन के लिए भारत में लाई गई।

1. शुद्ध भारतीय प्रजातियां

गाय की शुद्ध भारतीय प्रजातियों की सूची बहुत लंबी है। इसलिए हम केवल 5 चुनिंदा गायों के बारे में पढ़ेंगे-

i. **गीर** – यह विश्व की दूध देने वाली सबसे अच्छी प्रजातियों में से एक है। मूल रूप से ये गुजरात के गीर जंगलों में पाई जाती हैं। हालांकि पशुपालन

चित्र 1.2 गीर गाय

के लिए अन्य राज्यों में भी ये मिलती हैं। यह अपने लंबे और चौड़े सींगों से आसानी से पहचानी जा सकती है। यह भोडाली, गुजराती, काठियावाड़ी आदि अन्य नामों से भी जानी जाती है।

ii. **साहीवाल** – दूध उत्पादन के लिए दूसरी प्रमुख भारतीय प्रजाति साहीवाल

चित्र 1.3 साहीवाल गाय

है। यह अधिकांशतः हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में पाई जाती है। हालांकि कई अन्य प्रदेशों में भी इसे पाला जा रहा है।

iii. **देवनी** – यह महाराष्ट्र में पाई जाने वाली एक प्रसिद्ध प्रजाति है। दूध उत्पादन के साथ ही खेती के कार्यों में भी यह नस्ल प्रयोग की जाती है। यह डोंगन, वन्नेरा, शेवेरा आदि जैसे अन्य नामों से भी जानी जाती है।

iv. **ओंगोल** – यह मुख्यतः आंध्र प्रदेश में पाई जाती है। इस प्रजाति में बीमारियों से बचाव की ताकत होती है। साथ ही यह कम पानी में भी जीवित रह पाती है।

v. **हल्लिकर** – कम पानी तथा सूखे चारे पर निर्भर रहने वाली प्रजातियों में से यह सर्वश्रेष्ठ है। यह कर्नाटक के लगभग सभी जिलों में पाई जाती है।

पंगनोर, मालवी, नागौरी, लाल कंधारी, खारी, ककरेज, दांगी आदि भारत में पाई जाने वाली गाय की कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रजातियां हैं।

2. भारत में संकर प्रजातियां

समय के साथ-साथ गाय की कई विदेशी नस्लें भारत में लाई गई। उन्हें भारतीय गायों के साथ संकरित किया गया ताकि वे भारतीय परिस्थितियों में पल सकें। संकरण के लिए प्रयोग की जाने वाली कुछ प्रमुख प्रजातियां हैं-

i. **हालेस्टीन फ्रीसियन** – यह काले और सफेद रंग की गाय है। यह अच्छी गुणवत्ता का दूध देती है जिसमें वसा की मात्रा 3% से 4% तक होती है।

चित्र 1.4 होलिस्टीन गाय

ii. **जर्सी** – यह अधिकांशत: लाल या चाकलेट रंग में पाई जाती है। यह अच्छी गुणवत्ता का 4% से 6% फैट वाला दूध देती है

चित्र 1.5 जर्सी गाय

1.4 गाय के लाभ

i. **दूध** – हमें गाय से दूध मिलता है जो कि हमारे दैनिक भोजन का एक अभिन्न अंग है।

ii. **दूध के अन्य उत्पाद** – दूध से कई अन्य उत्पाद जैसे – मक्खन, पनीर, दही, छाछ आदि बनाए जाते हैं।

iii. **खेती में उपयोग** – हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। खेती में जुताई, बीजों की बुवाई, गहाई, कृषि उत्पादों के परिवहन आदि में बैलों का उपयोग किया जाता है।

iv. **अन्य उत्पाद** – गोबर का प्रयोग जैविक खाद के रूप में किया जाता है। गोमूत्र का भी औषधीय मूल्य है और इसका उपयोग कई आयुर्वेदिक औषधियों में किया जाता है। साथ ही इसे कई अन्य जैविक पदार्थों के साथ प्रयोग किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 1.2

सही या गलत–

1. गीर गाय गुजरात में पाई जाती है।
2. साहीवाल हरियाणा में पाई जाती है।
3. देवनी गाय महाराष्ट्र में पाई जाती है।
4. जर्सी गाय संकरण के लिए प्रयोग नहीं की जाती।
5. गोबर एक जैविक खाद है।

आपने क्या सीखा

- भारतीय अर्थव्यवस्था में गाय का एक महत्वपूर्ण योगदान है।
- शुद्ध भारतीय गाय की प्रजातियां अपने कूबड़ तथा गलकंबल के कारण आसानी से पहचानी जा सकती हैं।
- गीर, साहीवाल, देवनी, ओंगोल, हल्लिकर, लाल कंधारी आदि प्रसिद्ध भारतीय प्रजातियां हैं।
- भारत में पाई जाने वाली गाय की संकर प्रजातियां हालेस्टीन फ्रिजियन तथा जर्सी है।
- गाय हमें दूध व दूध से बने अन्य उत्पाद देती है। बैलों का प्रयोग खेती के काम-काज में किया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. वैदिक ग्रंथों में गाय को 'कामधेनु' क्यों कहा गया है?
2. भारतीय गाय की कोई दो शारीरिक विशेषताएं लिखिए।
3. किन्हीं चार भारतीय गायों की व्याख्या कीजिए।

उत्तरमाला

1.1

1. कामधेनु
2. आकार

3. कूबड़

4. सींग

5. गर्मी सहने की ताकत

1.2

1. सही

2. गलत

3. सही

4. गलत

5. सही